ब्राह्मण या वैदिक शिक्षा

प्राचीन भारतीय शिक्षा का उदय वेदों से माना जाता है। क्योकि यह शिक्षा सुव्यवस्थित एवं सुसंगठित स्वरूप के आधार पर दी जाती थी। इस शिक्षा प्रणाली में ब्राह्मणों की भागीदारी और आद्यिपत्य के कारण इस ब्रह्ममणीय शिक्षा भी कहा जाता है। इसके अन्तर्गत अपने देश भारत की वर्त्तमान परिस्थितियों, आवश्यकताओं संभावनाओं और आंकाक्षओं की पूर्ति के लिए प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली की उपयोगिताओं के विशेषताओं का वर्णन है। मैक्समूलर ने सबसे प्राचीन वेद ऋग्वेद की रचना 1200 ई० पूर्व बताया। इस काल का विस्तार लगभग 2500 ई० से 500 ई० तक माना जाता है।

ब्राह्मण या वैदिक शिक्षा के उद्देश्य :–

1 ज्ञान व अनुभूति पर बल

2 चित्तवृतियों का निरोध

3 ईश्वर भक्ति एवं धार्मिकता पर बल

4 चरित्र निर्माण

5 व्यक्तित्व का विकास

6 नगरिक एवं सामाजिक कर्तव्य पालन की भावना का समावेश

7 राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण का प्रसार

8 सामाजिक कुशलता की उन्नति

शिक्षा का महत्व

- According to Dr. A.S. Altekar:- Education was regarded as a source of illumination and power which transforms and enable our nature by the progressive and harmonious development of our physical, mental, intellectual and spiritual powers and faculties.
- डॉ० ए०एस० अल्तेकर के अनुसार शिक्षा को रोशनी और शक्ति का स्रोत माना जाता है जो हमारी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक शक्तियों और क्षमताओं के प्रगतिशील और सामंजस्यपूर्ण विकास द्वारा हमारी प्रकृति को बदल देती है और सक्षम बनाती है।

वैदिककालीन शिक्षा व्यवस्था:–

प्राचीन भारत में सम्भवत: 400 BC से पहले प्राथमिक शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं थी उस समय तक बालक का परिवार ही उसकी शिक्षा का केन्द्र था। बाह्मणों ने कुछ समय के पश्चात व्यक्तिगत रूप से शिक्षा देने का कार्य किया, जिसके फलस्वरूप शिक्षा की समूचित व्यवस्था हुई।

प्राचीन भारत में शिक्षा के दो स्तर था।

1 प्राथमिक शिक्षा

2 उच्च शिक्षा

Contemporary India and education
प्राथमिक शिक्षा

सामान्य परिचय _प्राथमिक शिक्षा के विषय में मुख्य बात यह है कि इस पर ब्राह्मणों का अधिकार नहीं था यही कारण की उन्होंने धर्म ग्रंथो में इसका विवरण न देकर इसकी उपेक्षा की डॉक्टर संतोष कुमार दास ने कहा है कि * ब्राह्मणों के पास उसे शिक्षा की उपेक्षा के कारण थे जो उनके हाथ में नहीं थे।

प्रवेश व विधि_ डॉ वेदमित्र ने कहा है कि प्राथमिक शिक्षा का आरंभ 5 वर्ष की आयु में विद्यालय में संस्कार से होता था सभी जातियों के बालक के लिए अनिवार्य था डॉक्टर एस अलतेकर का मत है कि इसकी अवधि 6 वर्ष की थी।

पाठ्यक्रम_ प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत बालकों को पहले कुछ **वादय** यंत्रों का उच्चारण करना और बोलना सिखाया जाता था जब वह इन यंत्रों को कंठस्थ कर लेते थे तब उनको पढ़ने और लिखने की शिक्षा दी जाती थी भाषा का वांछित ज्ञान होने के बाद उनका साहित्य और व्याकरण से परिचित कराया जाता था

इस प्रकार शिक्षा का पाठ्यक्रम वैदिक **मंत्रों** का स्मरण पढ़ना और लिखना, भाषा साहित्य, एवं व्याकरण था।

उच्च शिक्षा_

प्राचीन काल में केवल प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था थी, लेकिन सामाजिक प्रगति के साथ-साथ शिक्षा के विषयों की संख्या में वृद्धि होने के कारण उनके लिए पृथक शिक्षा व्यवस्थाओं शिक्षा संस्थानों की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए विशिष्ट विद्यालयों की स्थापना की गई इनकी स्थापना 5 BCतक हो गई थी यहीं से उच्च शिक्षा के इतिहास का सूत्र पात्र हुआ था

प्रवेश व अवधि_ उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार केवल ब्राह्मण क्षत्रियों और वैश्यों को था। इन जातियों के बालक सामान्य रूप से क्रमशः 8, 11, 12 वर्ष की आयु के आयु में शिक्षण संस्था में प्रवेश करते थे। साहित्य और धर्मशास्त्र की शिक्षा की अवधि क्रमशः 10 वर्ष की थी एवं एक वेद की का अध्ययन की आयु 12 वर्ष की थी।

शिक्षण विधि _ मुद्रित पुस्तकों के अभाव होने के कारण शिक्षण विधि प्राय मौखिक थी, छात्र गुरु से बेद आदि को सुनते थे उसके उच्चारण का अनुकरण करते थे एवं पाठ्य विषय को दोहराते थे उसके बाद वे एकांत में पाठ्य विषय का मनन, चिंतन, स्वाध्याय और पुनरावृति करते थे । शिक्षण विधि में प्रवचन, शास्त्रार्थ, प्रश्न उत्तर, वाद विवाद आदि का भी प्रयोग होता था।

परीक्षाएं व उपाधियां शिक्षा समाप्त होने पर छात्रों की मौखिक परीक्षा होती थी, इसके लिए उन्हें विद्वानों की सभा में उपस्थित होना होता था जहां विद्वानों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर देने पड़ते थे परीक्षा में अनुत्रीण होने वाले छात्रों को उपाधियां नहीं दी जाती थी

- शिक्षा संस्थान _प्राचीन काल में अनेक प्रकार की शिक्षा संस्थाएं थी जैसे
  1 टोल
  2 चरण
  3 घटिका
  4 परिषद
  5 गुरुकुल
  6 विद्यापीठ
  7 विशिष्ट विद्यालय ,
  8 मंदिर महाविद्यालय
  9 मंदिर महाविद्यालय
  10 विश्वविद्यालय ।
  शिक्षा के क्षेत्र स्त्री शिक्षा एवं व्यवसायिक शिक्षा विशिष्ट शिक्षा के अंतर्गत सैनिक शिक्षा चिकित्सा शास्त्र की शिक्षा एवं वाणिज्य की शिक्षा दी जाती थी।
  वैदिक कालीन शिक्षा की विशेषताएं
  1 विद्यारंभसंस्कार
  2 उपनयन संस्कार
  3 समावर्तन संस्कार
  4 विद्यालय भवन
  5 प्रकृति से संपर्क
  6 गुरुकुल प्रणाली
  7 वैदिक शिक्षा आरंभ करने की आयु
  8 अध्ययन की अवधि शिक्षा सत्र व छुट्टियां
  9 शिक्षा का स्वरूप
  10 नि:शुल्क व सार्वभौमिक शिक्षा
  11 शिक्षा की पद्धति
  12 शिक्षा का समय
  13 शिक्षण विधि
  14 कक्षा नायक की पद्धति
  15 छात्र जीवन संबंधी नियम

2 दिनचर्या
3 खान-पान
4 वेशभूषा
5 आचार विचार
आते थे ।

गुरु शिष्य संबंध इसके अंतर्गत शिक्षक के प्रति छात्र के कर्तव्य एवं छात्र के प्रति शिक्षक के कर्तव्य होते थे

16 दंड
17 बाह्य नियंत्रण से मुक्ति
18 वैदिक शिक्षा के दोष

डॉक्टर एफ ए K के शब्दों में ब्राह्मण शिक्षा प्रणाली रूड़ीबद्ध एवं औपचारिक हो गई और प्रगतिशील सभ्यता की आवश्यकता को पूर्ण करने में असमर्थ हो गई। दो अलतेकर ने लगभग 500 BC से लेकर भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली में दोष प्रकट होने के दशा को बताया है।ब्राह्मण या वैदिक शिक्षा प्रणाली में जिन दोषों के कारण भारतीय आवश्यकताओं को पूर्ण करने में असफल हुआ यही से उसके पतन का प्रारंभ हुआ वह निम्न है।

1 लोक भाषाओं की उपेक्षा
2 धर्मनिरपेक्ष विषयों की उपेक्षा
3 शुद्रों की शिक्षा की उपेक्षा
4 जनसाधारण की शिक्षा की उपेक्षा
5 स्त्री शिक्षा की उपेक्षा

- **आधुनिक शिक्षा के लिए वैदिक कालीन शिक्षा के की प्रासंगिकता / ग्रहणीय** तत्व:-प्राचीन भारतीय शिक्षा और आधुनिक भारतीय शिक्षा के मध्य अनेक शताब्दियों का अंतर होने के बावजूद प्राचीन शिक्षा के अनेक तत्व हैं, जिनको सिद्धांत और व्यवहार दोनों दृष्टियों से आधुनिक शिक्षा में स्थान दिया जा सकता है जो की निम्नलिखित है।

  1 आदर्शवादिता
  2 शांत वातावरण
  3 अध्ययन केविषय
  4 शिक्षण विधि व शिक्षा सिद्धांत
  5 छात्रों का सरल जीवन

  निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि डॉक्टर महेश सिंगल के अनुसार सिद्धांत रूप में हमें इतना ही तो होना ही चाहिए कि आज भले ही सर मुड़नेए लंगोटी पहनने तथा स्त्री के दर्शन मात्र से बचकर रहने की तो आवश्यकता नहीं है लेकिन सदा और संयमी जीवन नियमित दिनचर्या तथा दुर्व्यसनों से बचकर रहना आज की शिक्षा में वांछनीय।

प्राथमिक शिक्षा

सामान्य परिचय _प्राथमिक शिक्षा के विषय में मुख्य बात यह है कि इस पर ब्राह्मणों का अधिकार नहीं था यही कारण की उन्होंने धर्म ग्रंथो में इसका विवरण न देकर इसकी उपेक्षा की डॉक्टर संतोष कुमार दास ने कहा है कि ब्राह्मणों के पास उसे शिक्षा की अपेक्षा के कारण थे जो उनके हाथ में नहीं थे।प्रवेश व विधि_ डॉ वेदमित्र ने कहा है कि प्राथमिक शिक्षा का आरंभ 5 वर्ष की आयु में विद्यालय में संस्कार से होता था सभी जातियों के बालक के लिए अनिवार्य था डॉक्टर एस अलतेकर कामत है कि इसकी अवधि 6 वर्ष की थी। पाठ्यक्रम_ प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत बालकों को पहले कुछ बाधक यंत्रों का उच्चारण करना और बोलना सिखाया जाता था जब वह इन यंत्रों को कंठस्थ कर लेते थे तब उनको पढ़ने और लिखने की शिक्षा दी जाती थी भाषा का वंचित ज्ञान होने के बाद उनका साहित्य और व्याकरण से परिचित कराया जाता था इस प्रकार शिक्षा का पाठ्यक्रम वैदिक मित्रों का स्मरण पढ़ना और लिखना भाषा साहित्य एवं व्याकरण था। उच्च शिक्षा_ प्राचीन काल में केवल प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था थी लेकिन सामाजिक प्रगति के साथ-साथ शिक्षा के विषयों की संख्या में वृद्धि होने के कारण उनके लिए पृथक शिक्षा व्यवस्थाओं शिक्षा संस्थानों की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए विशिष्ट विद्यालयों की स्थापना की गई इनकी स्थापना 5th बी तक हो गई थी यहीं से उच्च शिक्षा के इतिहास का सूत्र पत्र हुआ था

प्रवेश व अवधि_ उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार केवल ब्राह्मण क्षत्रियों और विषयों को था इन जातियों के बालक सामान्य रूप से क्रमशः 8 11 12 वर्ष की आयु के आयु में शिक्षण संस्था में प्रवेश करते थे साहित्य और धर्मशास्त्र की शिक्षा की अवधि क्रमशः 10 वर्ष की थी एवं एक वेद की का अध्ययनकी आयु 12 वर्ष की थी।शिक्षण विधि मुदित पुस्तकों के अभाव होने के कारण शिक्षण विधि प्राय मौखिक थी छात्र गुरु से बेदर्दी ग को सुनते थे उसके उच्चारण का अनुकरण करते थे एवं पाठ्य विषय को दोहराते थे उसके बाद वे एकांत में पाठ्य विषय का मनन चिंतन स्वाध्याय और पुनरावृति करते थे शिक्षण विधि में प्रवचन शास्त्रार्थ प्रश्न उत्तर वाद विवाद आदि का भी प्रयोग होता था। परीक्षाएं व उपाधियां शिक्षा समाप्त होने पर छात्रों की मौखिक परीक्षा होती थी इसके लिए उन्हें विद्वानों की सभा में उपस्थित होना होता था जहां विद्वानों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर देने पड़ते थे परीक्षा में अनुत्रिम होने वाले छात्रों को उपाधियां नहीं दी जाती थी शिक्षा संस्थान _प्राचीन काल में अनेक प्रकार की शिक्षा संस्थाएं थी जैसे टोल चरण घटिका परिषद गुरुकुल विद्यापीठ विशिष्ट विद्यालय , मंदिर महाविद्यालय ब्राह्मण महाविद्यालय विश्वविद्यालय । शिक्षा के क्षेत्र स्त्री शिक्षा एवं व्यवसायिक शिक्षा

वेबसाइट शिक्षा के अंतर्गत सैनिक शिक्षा चिकित्सा शास्त्र की शिक्षा एवं वाणिज्य की शिक्षा दी जाती थी। वैदिक कालीन शिक्षा की विशेषताएं विद्या आरंभसंस्कार उपनयन संस्कार समावर्तन संस्कार विद्यालय भवन प्रकृति से संपर्क गुरुकुल प्रणाली वैदिक शिक्षा आरंभ करने की आयु अध्ययन की अवधि शिक्षा सत्र वह छुट्टियां शिक्षा का स्वरूप निशुल्क व सार्वभौमिक शिक्षा शिक्षा की पद्धति शिक्षक का समय शिक्षक की विधि कक्षा नायक की पद्धति छात्र जीवन संबंधी नियम इसके अंतर्गत आदतें दिनचर्या खान-पान वेशभूषा आचार विचार आते थे गुरु शिष्य संबंध इसके अंतर्गत शिक्षक के प्रति छात्र के कर्तव्य एवं छात्र के प्रति शिक्षक के कर्तव्य होते थे दंड बाह्य नियंत्रण से मुक्ति वैदिक शिक्षा के दोष डॉक्टर एफ ए के शब्दों में ब्राह्मण शिक्षा प्रणाली रूढ़ीबद्ध एवं औपचारिक हो गई और प्रगतिशील सभ्यता की आवश्यकता को पूर्ण करने में असमर्थ हो गई। दो अलतेकर ने लगभग 500 ई से लेकर भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली में दोष प्रकट होने के दशा को बताया है।ब्राह्मण या शिक्षा प्रणाली में जिन देशों के कारण भारतीय आवश्यकताओं को पूर्ण करने में सफल भी उसके पतन का प्रारंभ हुआ वह निम्न है। लोक भाषाओं की उपेक्षा धर्मनिरपेक्ष विषयों की उपेक्षा सूत्रों की शिक्षा की उपेक्षा जनसाधारण की शिक्षा की उपेक्षा स्त्री शिक्षा की उपेक्षा आधुनिक शिक्षा के लिए वैदिक कालीन शिक्षा के की प्रासंगिकता ग्रहणीय तत्व:-प्राचीन भारतीय शिक्षा और आधुनिक भारतीय शिक्षा के मध्य अनेक शताब्दियों का अंतर होने के बावजूद प्राचीन शिक्षा के अनेक तत्व हैं जिनको सिद्धांत और व्यवहार दोनों दृष्टियों से आधुनिक शिक्षा में स्थान दिया जा सकता है जो की निम्नलिखित है। आदर्शवादिता शांतवातावरण अध्ययन केविषय शिक्षण विधि व शिक्षा सिद्धांत छात्रों का सरल जीवन डिसकस थे हम कह सकते हैं डॉक्टर महेश सर सिंगल के अनुसार सिद्धांत रूप में हमें इतना ही तो मना ही चाहिए कि आज भले ही सर मने लंगोटी बढ़ने तथा स्त्री यात्री के सदस्यों के दर्शन मात्र से बचकर रहने की तो आवश्यकता नहीं है लेकिन सदा और संयमी जीवन नियमित दिनचर्या तथा दुर्व्यवहारशनों से बचकर रहना आज की शिक्षा में वांछनीय